E- ISSN No: 2395-0269
International Journal of Applied and Universal Research
Volume 2, Issue VI, DECEMBER 2015 Available online at: www.ijaur.com

"भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी साहित्य का योगदान"

उदय कुमार गुप्ता'
श्रीमती काजल गुप्ता''
शोधार्थी, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)
''शोधार्थी, महात्मा गांधी ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट सतना (म.प्र.)

स्वतंत्रता भारतीय यज्ञवेदी का वह पुष्प है जो हमें आज तक सुगन्ध दे रहा है और आगे भी देता रहेगा। हिन्दी भाषा का राष्ट्रीय चरित्र दिनोदिन निखरता गया। भारत के बुद्धिजीवियों ने राष्ट्रीय भाषा को संगठित और राष्ट्रव्यापी रूप देने के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 ई. में की थी। कांग्रेस अधिवेशनों के साथ राष्ट्रभाषा सम्मेलन होने लगे। राष्ट्रीय आंदोलन के समय सभी नेता हिन्दी के समर्थक थे। बालंगगाधर तिलक ने महाराष्ट्रकी भावना को मुखरित किया और भारतवासियों से आग्रह किया कि वे हिन्दी सीखें।

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक ज्ञान में आदिकाल से ही ओज और राष्ट्रीय चेतना जागरण में हिन्दी का कुशलता से प्रयोग होने लगा था। रासो साहित्य में चन्दवरदायी जैसा कवि पृथ्वीराज रासो जैसा महत्वपूर्ण काव्य लेकर अवतरित हुआ। यह महाकाव्य युद्ध और प्रकृति वर्णन को लेकर भारतीयों में राष्ट्रवादी चेतना जगाने वाला काव्य है। इसी तरह भक्तिकाल एक उत्सवधर्मी काव्य है जो भक्तों द्वारा रचा गया। यह काव्य परम्परा से लोक परम्परा को अपने में समेटे लोकमंगलकारी काव्य सिद्ध हुआ। रीतिकाल काव्य की रचना प्रधानतः श्रृंगाररस की है। इसीलिए स्वतंत्रता यज्ञ में कोई विशेष भूमिका निभाने में समर्थ सिद्ध नहीं हो सका, लेकिन आधुनिककाल से अब तक राष्ट्रीय चेतना जागरण में हिन्दी ने जो सेवा भारतीय समाज की की है, वह हम सभी भारतियों के लिए अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व का विषय है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने गद्य भाषा के महत्व को समझा इसीलिए पद्य के साथ गद्य में भी बड़े पैमाने पर साहित्य का सृजन प्रारंभ हो गया। इस तरह की प्रत्येक साहित्यिक कृति में अंग्रेजों के शोषणवादी चरित्र को खूब उभारा था, क्योंकि अंग्रेजों की शोषक प्रवृत्ति अत्यन्त घिनौनी हो गई थी। भारतेन्दु युग में जीवन की यही समस्याएं कविता का विषय बन गई। इस युग की कविता में अखबारीपन भी देखा जा सकता है जिसने भारतीयों की आर्थिक, सामाजिक दुर्दशा की ओर लोगों का ध्यान खींचा।

''अंग्रेज–राज सुख साज सजे सन भारी।
पै धन विदेश चलि जाति इहै अति ख्वारी।''

इस काल के कवियों का ध्यान भाषा समस्या की ओर गया। भारतीय चेतना के रूप में भाषा समस्या की ओर कवि का ध्यान जाना विशेष बात थी। भारतेन्दु कविताओं में आजादी के यज्ञ के प्रति सच्ची सहभागिता देखी जा सकती है। इसके साथ साथ इन्होंने कवि वचन सुधा–हरिश्चन्द्र मैगजीन के माध्यम से आम जन को खूब जाग्रति प्रदान की। 'भारत–दुर्दशा' और 'अन्धेर नगरी' नाटक उनके स्वतंत्रता यज्ञ में स्वयं की आहुति देने में जीवन्त प्रतीक है।

द्विवेदी युग में हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान की सामग्री प्रकाश में आई इसका खूब प्रयोग हुआ। साहित्य में राजभक्ति का स्वर मुख्यतः लुप्त होने लगा और राजनीतिक चेतना में बढ़ोत्तरी होने लगी। प्रसिद्ध निबन्धकार, बालमुकुन्द गुप्त ने अपने निबन्ध ''शिवशम्भू के चिट्ठे'' में अंग्रेजी राज की खूब खबर ली। भले ही उनके निबन्धों के विषय में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा हो कि उनके यहाँ विचार और भाव लुके छिपे से रहते हैं। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' की पंक्तियाँ स्वतंत्रता आन्दोलन के देश भक्तों की टंकार बनी हुई थी। अतीत के गौरवशाली इतिहास का चित्रण मैथिलीशरण गुप्त जी काफी प्रखरता से किया है।

पं. ग्याप्रसाद 'सनेही' ने देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत कविताओं का सृजन किया और भारतीयों को स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्र प्रेम जगाने वाली कविता लिखी जो आज भी जन जन का कण्ठहार बनी हुई है –

'' जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।''

पं. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं ने स्वतंत्रता सेनानियों के हृदय में राष्ट्र प्रेम की प्रबल भावना जाग्रत की है। 'पुष्प की अभिलाषा' कविता अत्यन्त लोकप्रिय है। महाकवि जयशंकर प्रसाद के प्रस्तुत गीत ने स्वतंत्रता के लिए आगे बढ़ने की खूब प्रेरणा प्रदान की–

''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला, स्ववंत्रता पुकारती।''

श्री जगदम्बा प्रसाद मिश्र ' हितैषी' की ये पंक्तियाँ आज भी बड़े गर्व से गायी जाती हैं –

''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाके निशां होगा।''

उस समय श्री श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का 'झण्डा गीत' तो स्वतंत्रता सैनानियों का मंत्र गीत ही बन गया था।

''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झण्डा ऊंचा रहे हमारा। ''

हिन्दी साहित्य के अनेक कवियों, विद्वानों ने स्वतंत्रता यज्ञ को पूरा कराने में अपनी भूमिका का कुशलता से निर्वाह किया है। सियाराम शरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डेय, रामप्रसाद विस्मिल सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रा नंदन पन्त, रामधारी सिंह दिनकर आदि के योगदान को स्वतंत्रता आंदोलन में नकारा नहीं जा सकता है।

इस तरह हिन्दी भाषा और साहित्य की भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के यज्ञ में बढ़–चढ़कर एक सार्थक भूमिका रही है। विभिन्न कवियों ने अपनी धारदार लेखनी से जन–सहभागिता की थी। धीरे धीरे ये सब मिलकर राष्ट्रवाद को मजबूत करने में सहायक सिद्ध हुए।

संदर्भ ग्रंथ –

(1)भारत का स्वतंत्रता इतिहास – डॉ. रोमिला थापर।
(2)भारत दुर्दशा (नाटक) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
(3)कवि वचन सुधा (समाचार पत्र) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।
(4)भारत–भारती –राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त।
(5)कवितायें – जयशंकर प्रसाद, प्रतापनारायण मिश्र, झण्डा गीत, वंशीधर शुक्ल।